

भारत सरकार  
जनजातीय कार्य मंत्रालय  
लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न संख्या 4727  
उत्तर देने की तारीख 21.08.2025

**जनजातीय अनुसंधान, सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम**

**+4727. श्री बैजयंत पांडा:**

क्या जनजातीय कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या किन्हीं प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों अथवा विश्वविद्यालयों ने "जनजातीय अनुसंधान, सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम (टीआरआई-ईसीई)" योजना के अंतर्गत दृश्य-श्रव्य वृत्तचित्रों सहित विभिन्न अनुसंधान अध्ययन, पुस्तकों का प्रकाशन अथवा प्रलेखन शुरू किया है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) ओडिशा में मौजूदा और प्रस्तावित जनजातीय अनुसंधान संस्थानों और उत्कृष्टता केन्द्रों का ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या सरकार ने महत्वपूर्ण अध्ययनों को उजागर करते हुए, जनजातीय समुदायों के ऐतिहासिक पहलुओं का प्रलेखन, जनजातीय कार्य मंत्रालय (एमओटीए) और संबंधित राज्य विभागों की उपलब्धियों और नियमित अंतरालों पर अन्य आवश्यक प्रचार को उजागर करने वाले कोई प्रकाशन प्रकाशित किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

जनजातीय कार्य राज्य मंत्री  
(श्री दुर्गादास उइके)

(क) से (घ): जनजातीय अनुसंधान सूचना, शिक्षा, संचार और कार्यक्रम (टीआरआई-ईसीई) एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जिसके अंतर्गत अनुसंधान संगठनों, प्रतिष्ठित संगठनों, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों को धनराशि जारी की जाती है जहाँ विशेषज्ञता मौजूद है और जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अग्रणी अनुसंधान करके अपनी पहचान बनाई है, उन्हें महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अंतर को पाटने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना का उद्देश्य शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, डिजिटल शासन आदि के क्षेत्रों में अनुकरणीय मॉडल तैयार करना है। ऐसे संगठनों द्वारा ऑनलाइन या वास्तविक रूप से प्रस्तुत परियोजना प्रस्तावों की मंत्रालय द्वारा जाँच की जाती है और आगे के विचार एवं अनुमोदन के लिए सचिव, जनजातीय कार्य की अध्यक्षता वाली परियोजना अनुमोदन समिति (पीएसी) के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत विभिन्न शोध अध्ययन करने के लिए विभिन्न संगठनों को स्वीकृत परियोजनाओं का विवरण **अनुलग्नक-I** में दिया गया है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, केंद्र प्रायोजित योजना 'जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को सहायता' के अंतर्गत, राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) में ओडिशा स्थित जनजातीय अनुसंधान संस्थान सहित 29 जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस योजना के अंतर्गत, अवसंरचनात्मक आवश्यकताओं, अनुसंधान एवं प्रलेखन गतिविधियों, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों, जनजातीय उत्सवों के आयोजन, अनूठी सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यात्राओं और आदिवासियों द्वारा आदान-प्रदान यात्राओं के आयोजन से संबंधित प्रस्तावों पर विचार किया जाता है ताकि उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं और रीति-रिवाजों का संरक्षण और प्रसार किया जा सके। टीआरआई मुख्य रूप से राज्य सरकार/केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाले संस्थान हैं।

केंद्र सरकार और राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारों द्वारा नियमित अंतराल पर जनजातीय समुदायों के ऐतिहासिक पहलुओं का दस्तावेजीकरण करते हुए महत्वपूर्ण अध्ययनों पर प्रकाश डालने वाले विभिन्न प्रकाशन प्रकाशित किए गए हैं। ये प्रकाशन <https://repository.tribal.gov.in/> और <https://tribal.nic.in/repository/> पर देखे जा सकते हैं। इसके अलावा, जनजातीय कार्य मंत्रालय की उपलब्धियों का भी दस्तावेजीकरण और प्रकाशन किया गया है। इसे नीचे दिए गए लिंक <https://tribal.nic.in/writereaddata/News/20240315094242043248610yearsbookletEnglish.pdf> के माध्यम से देखा जा सकता है:

दिनांक 21.08.2025 को उत्तर दिए जाने हेतु लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 4727 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में संदर्भित विवरण

क्र.सं.	संगठन/संस्थान का नाम	परियोजना का नाम
1	विश्लेषणात्मक जनजातीय अध्ययन परिषद, कोरापुट	1. विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) की दुर्दशा और ओडिशा में उनके समावेश की स्थिति: कुटिया कोंध, दिदायी, जुआंग का एक मामला अध्ययन (केस स्टडी)। 2. जनजातीय आजीविका के स्रोत के रूप में बागवानी: ओडिशा के रायगड़ा जिले के डोंगरिया कंधा का एक मामला अध्ययन
2	अमृता विश्व विद्यापीठम, केरल	1. स्कूली छात्रों के माध्यम से गाँवों में स्वास्थ्य और सामाजिक जागरूकता (जागरूकता दूत कार्यक्रम) 2. जनजातियों के लिए ई-साक्षरता और स्वास्थ्य जागरूकता 3. किशोरियों और युवतियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता 4. कोयंबटूर जिले की आदिवासी महिलाओं के लिए सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के बारे में जागरूकता
3	भाषा अनुसंधान संस्थान	1. गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों में संकटग्रस्त/लुप्त होती भाषाओं की पहचान और दस्तावेजीकरण 2. गुजरात के नर्मदा जिलों के आदिवासी समुदायों के बीच पारंपरिक जीवन-कौशल, परिवर्तनशील आजीविका और संभावित अवसरों का अध्ययन। 3. विद्वान डॉ. भगवानदासभाई पटेल द्वारा दर्ज उत्तरी गुजरात के गरासिया और डूंगरी भीली समुदायों के गीतों, मौखिक महाकाव्यों, किंवदंतियों और कहानियों का डिजिटलीकरण। 4. सिक्किम के आदिवासी लोकगीतों और संगीत का दस्तावेजीकरण 5. भाषा वन का विकास: आदिवासी अकादमी, तेजगढ़ में भारतीय भाषाओं के ध्वनि अभिलेखागार का बाह्य वन-संग्रहालय 6. जनजातीय अभिलेखागार वेबसाइटें और ई-पुस्तक वेबसाइटें
4	पीरामल स्वास्थ्य, हैदराबाद	जनजातीय शिक्षा: एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों (ईएमआरएस) के कामकाज में सुधार
5	ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टीईआरआई), दिल्ली	ओडिशा, झारखंड और असम में भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार (आरएफसीटीएलएआरआर) अधिनियम, 2013 के कार्यान्वयन का मूल्यांकन

6	पतंजलि अनुसंधान संस्थान	<ol style="list-style-type: none"> <li>सरकारी योजनाओं का सर्वेक्षण और उनके वास्तविक लाभार्थियों का विवरण।</li> <li>पारंपरिक चिकित्सकों से रोग-वार नृजातीय-औषधीय जानकारी का संग्रह।</li> <li>विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों से पौधों का संग्रह, हर्बेरियम तैयार करना और उनकी पहचान।</li> <li>अनुसंधान समीक्षा दृष्टिकोण के साथ पौधों की औषधीय जानकारी का दस्तावेजीकरण।</li> <li>जनजातीय कारीगरों के विभिन्न कार्यों का दस्तावेजीकरण।</li> <li>चयनित महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का हर्बल मोनोग्राफ तैयार करना।</li> <li>जनजातीय समुदायों के पारंपरिक औषधीय पौधों की अनुसंधान रूपरेखा।</li> <li>जनजातीय पारंपरिक चिकित्सकों का मार्गदर्शन, समन्वय और प्रशिक्षण।</li> <li>मधुमक्खी पालन, कृषि और पारंपरिक कलाओं के माध्यम से जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका सहायता प्रणाली।</li> <li>आजीविका सहायता के लिए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और वेब-पोर्टल</li> </ol>
7	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर	भागीदारीपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र में स्वास्थ्य एवं रोग के बारे में जागरूकता पैदा करके स्थानीय लोगों को नियोजित करके एवं उन्हें सशक्त बनाकर जिला सिरोही (राजस्थान) के जनजातीय लोगों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाना।
8	फिक्की सामाजिक-आर्थिक और विकास प्रतिष्ठान	जनजातीय कल्याण और उद्यमिता विकास: चुनौतियों को अवसरों और कार्यों में बदलना
9	पीरामल स्वास्थ्य प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान (पीएसएमआरआई), हैदराबाद	1. स्वास्थ्य और पोषण डेटा का भंडार और जिला तथ्यपत्र (द्वितीयक स्रोतों पर आधारित)
10	आईबीआरएडी, कोलकाता	कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, दस्तावेजीकरण के माध्यम से जागरूकता पैदा करना और जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और सतत आजीविका विकास के लिए महिला सशक्तिकरण पर विशेष जोर देते हुए पीवीटीजी की क्षमता निर्माण करना।
11	टीईआरआई, नई दिल्ली	सामुदायिक वन संसाधन अधिकारों के संदर्भ में वन प्रशासन मॉडल का विकास

12	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान (आईएफजीटीबी), कोयंबटूर, तमिलनाडु	वनवासियों की आजीविका में प्रभावी सुधार के लिए टर्मिनलियाओं का प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन
13	आईसीएमआर-राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, मध्य प्रदेश	आईसीएमआर-एनआईआरटीएच में जनजातीय बस्तियों की स्थापना के माध्यम से भारत की पांच जनजातियों में जनजातीय संस्कृति, जीवन शैली, पशुपालन गतिविधियों और मृत्यु के कारणों को समझना
14	विश्लेषणात्मक जनजातीय अध्ययन परिषद (सीओएटीएस)	प्रश्नावली का विकास और अनुसंधान सहायकों और अन्वेषकों का चयन अनुसंधान सहायकों और अन्वेषकों का प्रशिक्षण और द्वितीयक जानकारी का संग्रहण क्षेत्र अध्ययन ब्लॉक-वार और पंचायत-वार आंकड़ों का संकलन तैयारी की तालिकाएं मसौदा रिपोर्ट का लेखन कार्यशाला में मसौदा रिपोर्ट की प्रस्तुति और रिपोर्ट का संशोधन रिपोर्ट पर जिल्दसाजी और प्रस्तुति
15	भारतीय सांख्यिकी संस्थान, गिरिडीह	झारखंड और ओडिशा में वनवासियों के लिए आजीविका के अवसरों को मजबूत करना
16	अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम	25 वर्ष पूर्व पेसा में परिकल्पित ग्राम सभा की प्रभावशीलता पर शोध
17	बीआरएलएफ नई दिल्ली	अनुसूचित जनजातियों के कल्याण के लिए कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों को सहायता नामक जनजातीय कार्य मंत्रालय की योजना का मूल्यांकन

\*\*\*\*\*